6

भारत में अंग्रेज़ों का राज्य बना

तुमने यह अक्सर सुना होगा कि अंग्रेज़ भारत मे व्यापार करने आए थे और राज्य करने लगे।

आओ समझें कि यह कैसे हुआ।

तुम पिछले पाठो के अनुसार बताओ कि -
भारत में किन यूरोपीय देशो के व्यापारी आते थे?
वे व्यापार का मुनाफा बढ़ाने के लिए क्या कोशिशें करते थे?
मुग़ल साम्राज्य के कमज़ोर पड़ने के बाद भारत में कौन-कौन से राज्य बने?

सशस्त्र व्यापारी

भारत मे व्यापार करने के लिए यूरोप के व्यापारियो ने अपनी अपनी कंपनियां बनाईं थी। अंग्रेज़ व्यापारियो की 'इंगलिश ईस्ट इंडिया कंपनी' थी और फ्रांस के व्यापारियो की 'फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी' थी। इंगलिश ईस्ट इंडिया कंपनी और फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी भारत के व्यापार पर कब्ज़ा करने के लिए एक दूसरे से लंबे समय तक लड़ती रहीं। एक कंपनी इस कोशिश में रहती कि दूसरे को भारत से खदेड़ कर निकाल दे। इसके लिए दोनो ही कंपनियां अपने देश - इंग्लैंड व फ्रांस - से सैनिक बुलवाने लगीं। इंग्लैंड और फ्रांस देश के राजा अपनी अपनी कंपनियो का पूरा समर्थन करते थे और उन्हें मदद देते थे।

भारत में ज़मीन लेकर इन कंपनियों ने अपने अपने किले भी बनाए और भारत में एक दूसरे से कई युद्ध लड़े।

अस्त्र-शस्त्र, सैनिक बल और किलेबंदी के सहारे होने वाला यह व्यापार कोई साधारण व्यापार नही रहा। भारत के राजाओं और नवाबो को यह बात बड़ी खतरनाक लगी कि उनके राज्य मे किसी दूसरे

अंग्रेज़ सेना का एक अफसर भारत पधारते हुए

देश के लोग सेनाएं रखें, युद्ध लड़े, किले बनाएं और अपनी सैनिक शक्ति की धाक जमाएं।

क्या तुम समझा सकते हो कि उन्हें इसमें क्या ख़तरा नज़र आया?

राजा व नवाब व्यापार के खिलाफ नही थे। पर वे अपने राज्य मे किसी और की सैनिक ताकत नही बनने दे सकते थे। उन्होंने कंपनियों की सैनिक ताकत पर रोक लगाने की कोशिश की।

उदाहरण के लिए, 1764 में कर्नाटक के नवाब अन्वरुद्दीन खान ने फ्रेंच कंपनी के खिलाफ अपनी सेना भेजी। पर, कर्नाटक के नवाब की बड़ी सेना को फ्रेंच कंपनी की छोटी सी सेना ने पूरी तरह हरा दिया।

इस हार ने सब को आश्चर्य में डाल दिया। यह सबके सामने साबित हो गया कि छोटी सी यूरोपीय सेना अपने से बड़ी भारतीय सेना से कही ज़्यादा बेहतर होती है। इससे यूरोपीय व्यापारियों का दुःसाहस बढ़ने लगा। वे सोचने लगे कि हम अपनी सेना के बल पर भारत में मनचाहा करवा सकते हैं।

पर, यूरोपीय सेना इतनी शक्तिशाली क्यो साबित हुई?

यूरोपीय सेना की खासियत

यूरोपीय सेना के पास भारतीय सेनाओं से बेहतर तोपें और बंदूकें थी। पर, ज़्यादा महत्व की बात यह है कि यूरोपीय सैनिकों को नियमित रूप से अभ्यास कराया जाता था और बहुत अनुशासन में रखा जाता था।

यूरोपीय सेना में रोज़ परेड और ड्रिल होती थी। इस तरह के अभ्यास से कंपनी की सेना में भर्ती किए गए भारतीय सिपाही भी लड़ाई में बहुत कुशल हो जाते थे जबकि भारतीय सेनाओं में रोज़ परेड और ड्रिल का नियम नही था। दोनों सेनाओं में एक महत्वपूर्ण फर्क यह भी था कि भारतीय सैनिकों की तुलना मे यूरोपीय सैनिकों को ज़्यादा नियमित रूप से वेतन मिल जाता था।

इन विशेषताओं के कारण यूरोपीय सेना का पलड़ा भारतीय सेनाओं से भारी रहने लगा।

यहां यूरोपीय फौज की दो विशेषताएं बताई हैं। कक्षा में चर्चा करो कि इनके कारण यूरोपीय फौज युद्ध में ज़्यादा सफल क्यों रह पाती होगी?

भारत के राज्य और अंग्रेज़ कंपनी की सेना

एक तरफ फ्रेंच कंपनी से होड़ में अंग्रेज़ कंपनी जीतने लगी थी। दूसरी तरफ भारत के राज्यों में भी उसका और उसकी सेना का बड़ा दबदबा था। इस सबका फायदा व्यापार में मुनाफा बढ़ाने के लिए किया जाने लगा। वह कैसे, आओ देखें।

भारत के राजा और नवाब अपना अपना राज्य बढ़ाने में और एक दूसरे पर हमला करने में लगे रहते थे। कंपनी इन झगड़ों में अपनी टांग अड़ाने लगी। अगर कंपनी किसी राजा या नवाब का साथ देने को तैयार हो जाती और अपनी सेना उसके लिए लड़ने भेज देती तो उस राजा या नवाब की ताकत बहुत बढ़ जाती थी।

अंग्रेज़ सेना के भारतीय सिपाही अभ्यास करते हुए

राजाओं की सैनिक ताकत बढ़ाने के बदले

में कंपनी उनसे व्यापार की कई रियायतें ऐंठने लगी।

राजा कंपनी की सैनिक सहायता के बदले में उसे बहुत धन भेंट में देते। यह धन कंपनी के व्यापार के काम आता।

कई बार कंपनी राजा से उसके राज्य का एक इलाका भेंट में ले लेती। उस इलाके के गांव शहरों से कंपनी लगान वसूल करती और लगान से मिले धन से व्यापार करती। इस तरह मिले धन से कंपनी अपनी सेना का खर्चा भी चलाने लगी।

कंपनी को भेंट देने और उसकी सेना का खर्चा उठाने में भारतीय राजाओं पर बहुत बोझ पड़ने लगा। वे कंपनी की दूसरी बातों से भी परेशान रहते थे।

कंपनी द्वारा राज्य के काम में दखल

कंपनी राज्यों में जो माल खरीदती थी उस पर उसे कई कर न देने की छूट मिली हुई थी। पर, कंपनी को मिली इस छूट का फायदा और बहुत लोग उठा रहे थे। कंपनी के कर्मचारी अपना निजी व्यापार भी कर रहे थे। वे अपने माल को कंपनी का माल बता देते थे और कर नहीं चुकाते थे। इस तरह कंपनी तो धनवान हो ही रही थी, उसके कर्मचारी व अफसर भी निजी रूप से मालामाल होके भारत से लौटते थे। कई भारतीय व्यापारी व सेठ थे जो कंपनी के व्यापार में मदद करते थे। वे भी अपने माल को कंपनी का माल बता कर कर देने से बच जाते थे।

कंपनी की आड़ में राज्यों में लूट-खसोट, धोखा-धड़ी मची हुई थी। कंपनी को अपनी सैनिक ताकत का घमंड था इसलिए वह उद्दंडता से काम कर रही थी। कंपनी कारीगरों से ज़ोर ज़बरदस्ती से बहुत कम कीमत पर माल खरीदने की कोशिश करती रहती। जो इलाके कंपनी को भेंट में मिले थे उनके किसानों से भी हद से ज़्यादा लगान वसूल करने की कोशिश करती रहती। जब राजा इन बातों का विरोध करते तो अंग्रेज़ उनसे लड़ पड़ते। उस राजा को हटा कर वे ऐसे किसी व्यक्ति को राजा बनाते जो उनके व्यापार के तरीकों पर रोक न लगाए।

इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी भारत के राजाओं के राज्य में क्या-क्या फायदे उठाने की कोशिश करती थी?

अंग्रेजों का राज्य बना

समय के साथ अंग्रेजों को लगने लगा कि वे व्यापार के फायदे के लिए भारत का खुल कर इस्तेमाल तभी कर पाऐंगे जब वे खुद उस पर राज्य करें।

भारत अंग्रेज़ों के व्यापार के लिए इतना महत्वपूर्ण क्यों था कि वे उस पर राज्य बनाने की सोचने लगे?

सबसे पहले अंग्रेज़ भारत में बुना कपड़ा यूरोप में बेच कर मालामाल होते थे। फिर जब इंग्लैंड में कपड़े के कारखाने लग गए तो वे वहां का बना कपड़ा और दूसरा सामान भी भारत में बेचने लगे। भारत से वे कपास खरीद कर अपने देश के कारखानों को बेचते। वे भारत में कई ज़रूरी फसलें उगवा कर उन्हें दूर दूर बेचते - जैसे - नील, पटसन, अफीम, गन्ना, चाय, कॉफी। उन्होंने व्यापार की ये सब चीज़ें लाने ले जाने के लिए भारत के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में रेल लाईनें और सड़कें बिछाने की कोशिश भी शुरू की। इसके लिए वे लोहा, कोयला आदि खनिजों की खदानें खोलना चाहते थे व जंगल से लकड़ी का व्यापार करना चाहते थे।

यह सब करने के लिए उन्हें भारत में जगह जगह अपने अधिकारी रखने और भारत के लोगों पर अपना नियंत्रण बनाने की ज़रूरत महसूस हुई।

इस तरह एक ऐसा वक्त आया जब अंग्रेज़ भारत के राजाओं व नवाबों को हटा कर खुद शासन चलाने लगे।

सन् 1757 में अंग्रेज़ों ने पलासी नाम की जगह पर बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला को हरा कर बंगाल

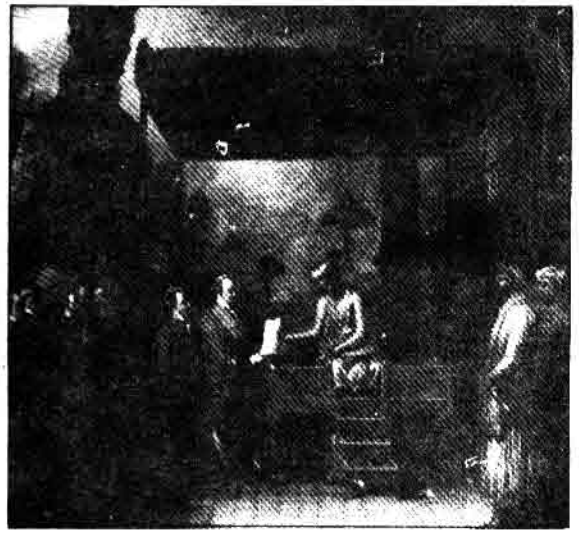

राबर्ट क्लाइव मुग़ल बादशाह से बंगाल की लगान लेने का अधिकार पा रहा है

पर अधिकार जमाया। पलासी का युद्ध भारत के इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण है। फिर धीरे-धीरे अंग्रेज़ भारत के सब छोटे बड़े राज्यों पर कब्ज़ा करने लगे।

कई राजाओं और नवाबों ने अंग्रेज़ों की चालों को समझा और बहुत तैयारियां कर के अंग्रज़ों का कड़ा मुकाबला किया। ऐसे राजा थे मैसूर के हैदर अली और टीपू सुल्तान, मराठा सरदार महादजी सिंधिया, नाना फडनविस आदि। मगर इनके राज्य छोटे थे और वे एक-एक कर के अंग्रेज़ों से हार गए।

टीपू सुल्तान

अंग्रेज़ी सफलता के पीछे रॉबर्ट क्लाईव, वॉरेन हेस्टिंग्स, लॉर्ड वेलेसली जैसे सेनापतियों का महत्वपूर्ण योगदान था।

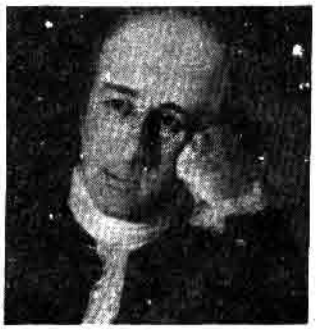

वॉरेन हेस्टिंग्स

धीरे-धीरे भारत के अनेकों इलाकों पर अंग्रेज़ों का सीधा शासन स्थापित हो गया। कई जगहों पर पुराने राजाओं व नवाबों का शासन बना रहा पर ये राजा व नवाब अंग्रज़ों के अधीन हो गए। उनके दरबार में एक अंग्रेज़ अधिकारी (जिसे रेसीडेन्ट कहते थे) रहने लगा ताकि राज्य के काम काज पर अंग्रेज़ सरकार की निगरानी बनी रहे।

उदयपुर के राजा के दरबार में अंग्रेज़ रेसीडेन्ट

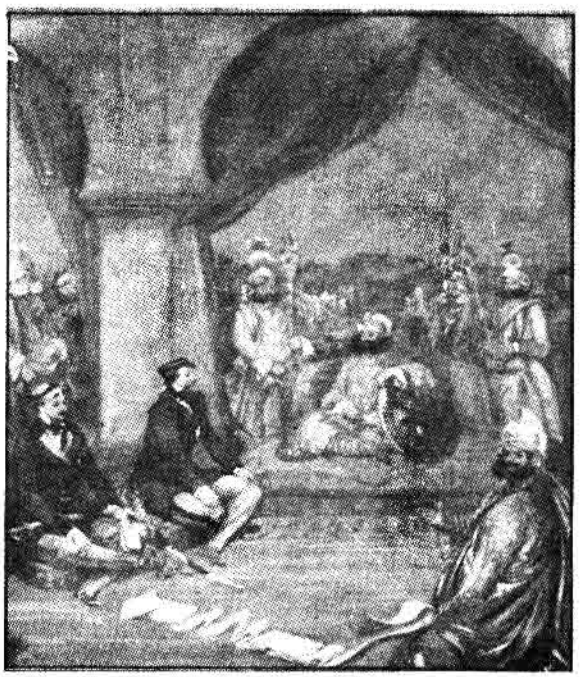

नक्शे में देखो सन् 1857 तक आते आते अंग्रेज़ों की हुकूमत कहां तक फैली थी?
उन राज्यों की सूची बनाओ जहां भारतीय राजा बने रहे।
व्यापार करते करते इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी भारत में राज्य बनाने की क्यों सोचने लगी?
अंग्रेज़ों के व्यापार के लिए भारत की क्या चीज़ें महत्वपूर्ण थीं?

अंग्रेज़ी राज्य से असंतोष

अंग्रेज़ों को अपना शासन जमाने के लिए बहुत लड़ना पड़ा। मगर उन्हें फिर भी चैन न मिला। उन्हें लगातार भारतीय लोगों के विद्रोह का सामना करना पड़ा।

पुराने राज-परिवार के लोग विद्रोह करते थे क्योंकि अंग्रेज़ अपनी मर्ज़ी से किसी को भी राजा बनाते या हटाते थे।

किसान व ज़मीन के मालिक विद्रोह करते थे क्योंकि उनसे बहुत अधिक और बहुत सख़्ती से लगान वसूल किया जाता था और उन्हें अपनी ज़मीन नीलामी के ज़रिये खोने का डर हमेशा बना रहता था।

आदिवासी भी लड़ाई के मैदान में उतरे क्योंकि अंग्रेज़ों के नये कायदे-कानून लागू हो रहे थे। इनसे आदिवासी लोग जंगल और ज़मीन पर अपने अधिकार खोने लगे थे। तुम इन बातों के बारे में अगले पाठों में गहराई से पढ़ोगे।

उन दिनों हिंदुओं व मुसलमानों के मन में यह भी डर बैठने लगा था कि अंग्रेज़ उनके धर्म को नष्ट करके सब को ईसाई बना देंगे।

अंग्रेज़ों का सबसे कड़ा मुकाबला सन् 1857 में हुआ जब कुछ महीनों के लिए लगभग पूरे उत्तर-भारत पर अंग्रेज़ों की हुकूमत उखाड़ फेंकी गई। यह विद्रोह अंग्रेज़ों के भारतीय सिपाहियों ने शुरू किया - मगर देखते देखते पुराने राज-परिवार, ज़मीदार, किसान आदिवासी व कारीगर सब इस विद्रोह में शामिल होते गए।

1857 के विद्रोह की शुरुआत

जगह - मेरठ की सैनिक छावनी, जहां अंग्रेज़ी फौज ठहरी थी।

दिन - इतवार, 10 मई, सन् 1857

सूरज ढलने ही लगा था जब फौज के भारतीय सिपाहियों ने अपने अंग्रेज़ अफसरों पर बंदूक चलानी शुरू कर दी। ये वही सैनिक जिन्होंने अंग्रेज़ों की तरफ से लड़कर पूरे भारत के राजाओं पर विजय पाई थी। अब वे अंग्रेज़ों के व्यवहार से तंग आ गए थे। उन्हें न तंख्वाह ठीक से मिलती थी, न फौज में उनसे इज्ज़त से बर्ताव किया जाता था। ऊपर से सिपाहियों को शक था कि बंदूकों के नए कारतूसों में गाय और सुअर की चरबी मिली है। सिपाही डरने लगे कि उनका धर्म भ्रष्ट हो जाएगा। सो उन्होंने 10 मई सन् 1857 को अपने अंग्रेज़ अफसरों पर गोली चला दी।

विद्रोही सिपाही रातों-रात देहली की तरफ कूच कर गए। सुबह होते ही वे यमुना नदी पार करके देहली पहुंच गए। इस बीच मेरठ शहर में खबर फैली कि सिपाहियों ने अंग्रेज़ों के खिलाफ विद्रोह कर दिया है। तब शहर में गदर मच गया। बाज़ार से भीड़ का रेला आया और अंग्रेज़ों के बंगलों पर हमला बोलने लगा। भीड़ में पुलिस के लोग भी शामिल हो गए थे और देखते-देखते आसपास के अंग्रेज़ों के बंगले व दफ्तर जलाए गए, और कई अंग्रेज़ लोगों की हत्याएं हुईं।

उधर, मेरठ के विद्रोही सिपाही दिल्ली पहुंच गए थे। वहां मुग़ल वंश का बादशाह बहादुर शाह ज़फर लाल किले में अंग्रेज़ों द्वारा नज़रबंद था। सिपाहियों ने उसे अपना बादशाह एलान किया और उसे अंग्रेज़ों

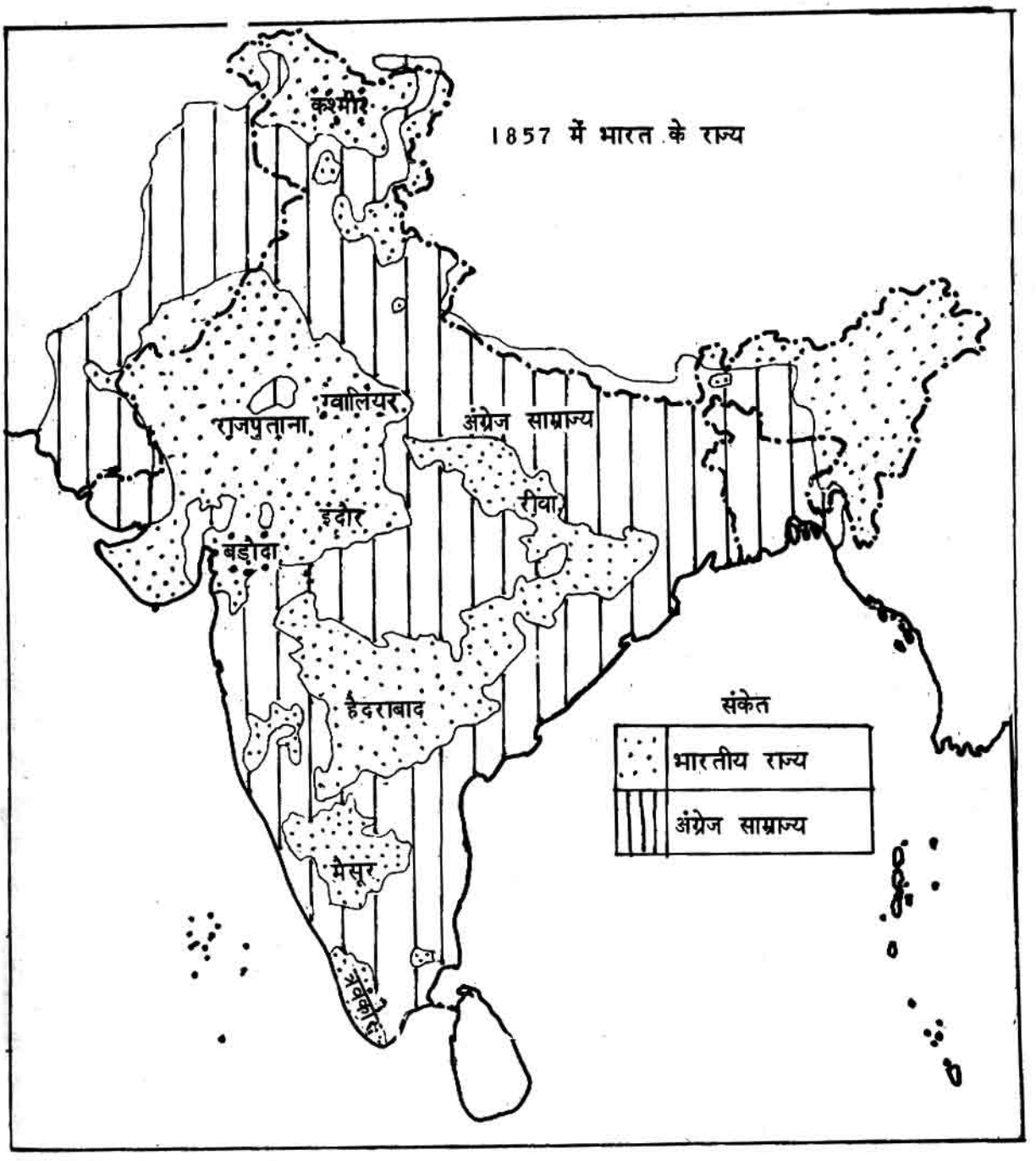
1857 में भारत के राज्य
कश्मीर
ग्वालियर
राजपुताना
अंग्रेज साम्राज्य
रीवा
इंदौर
बड़ोदा
हैदराबाद
मैसूर
त्रावणकोर
संकेत
भारतीय राज्य
अंग्रेज साम्राज्य

की हुकूमत ठुकराने को राज़ी कर लिया। "अंग्रेज़ो को भगा कर पुराना मुग़ल राज्य फिर से स्थापित करना है" - यह विद्रोहियो की पुकार थी।

इस पुकार का फैलना हुआ नही कि जगह-जगह पर अंग्रेज़ो के खिलाफ विद्रोह भड़क उठा - अलीगढ़, मैनपुरी, बुलंदशहर, एटक, मथुरा की छावनियो मे सिपाहियो ने गदर मचा दिया। अंग्रेज़ बुरी तरह घबरा गए। उनकी स्थिति वाकई बहुत नाज़ुक थी। भारत में 45,000 अंग्रेज़ी फौजी व अफसर थे। पर फौज़ मे भारतीय सिपाहियो की संख्या इनसे कही अधिक थी - दो लाख बत्तीस हज़ार। ये ही सिपाही विद्रोह पर उतर आए थे। तो हर शहर मे अंग्रेज़ निवासियो की जानमाल की रक्षा कौन करेगा? भारतीय फौजो पर तो भरोसा नही किया जा सकता था। इसलिए कई अंग्रेज़ फौजी अंग्रेज़ परिवारो की रक्षा के लिए रोक लिए जाते थे। इस सब के चलते विद्रोह तुरंत कुचला व दबाया न जा सका और समय मिलने के कारण एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र तक फैलता गया।

नाना साहब पेशवा

विद्रोह का फैलना

कई राज-परिवार जिनके राज्यो को अंग्रेज़ो ने हड़प लिया था, विद्रोह मे शामिल होने लगे, जैसे अवध के पुराने नवाब और मराठा पेशवा नाना साहब।

क्या तुम जानते हो इस कविता द्वारा कौन प्रसिद्ध हुआ -

"चमक उठी सन सत्तावन में
वो तलवार पुरानी थी।
खूब लड़ी मरदानी वो तो
----------थी।।"

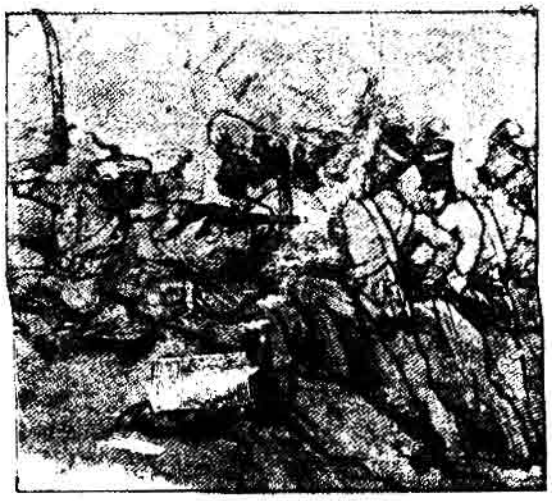

विद्रोहियो की अंग्रेज़ सेना से मुठभेड़

सब तरफ से विद्रोही सिपाही और राजाओं की सेनाएं देहली की तरफ बढ़ने लगी। सब तरफ यह उम्मीद जाग उठी कि अंग्रेज़ो को भगाकर पुराने मुग़ल राज्य और पुरानी व्यवस्था लौटा लाई जायेगी।

गांव-गांव में विद्रोह

उत्तर-प्रदेश और बिहार मे विद्रोह की आग गांव-गांव कस्बा-कस्बा फैलती गई। किसानो व पुराने ज़मीदारो ने मिलकर हथियार उठाए और अंग्रेज़ो व उनके अफसरो को मार भगाया। उन्होने अंग्रेज़ो को लगान देना बंद कर दी, रेल की लाईनें तोड़ डाली, पुलिस थानो, डाकतार-घरो, कचहरियो को जला डाला और टेलीग्राफ के तार तोड़ दिए। ये सब वो नई चीज़े थी, जो अंग्रज़ो ने भारत में बनाई थी। अंग्रेज़ो को हारते देखकर लोगो में विद्रोह करने की हिम्मत और बढ़ती गई।

अंग्रेज़ी कानून की मदद से गांवो मे साहूकारो की ताकत बहुत बढ़ गई थी। विद्रोही लोगो ने उन साहूकारो के, जिनके पास किसानो की ज़मीन गिरवी थी, या जिन्होने किसानों की ज़मीन हड़प ली थी, घर लूट लिए, और उनके कागज़ात जला दिए।

विद्रोह का कुचलना

विद्रोहियो की इतनी बड़ी और व्यापक सफलता के बावजूद अंग्रेज़ धीर-धीरे स्थिति पर काबू पाने लगे।

विद्रोही बड़ी वीरता से लड़े। मगर उनमें दो बड़ी कमियां थी। हर शहर या प्रदेश के विद्रोही अलग-अलग अंग्रेज़ो से लड़ रहे थे। आपस मे मिल-जुल के एक योजनाबद्ध तरीके से नहीं लड़े। अतः अंग्रेज़ हरेक क्षेत्र के विद्रोहियों से अलग-अलग निपट पाए।

विद्रोहियो के पास आधुनिक हथियारो की सख़्त कमी थी। आधुनिक बंदूकें व तोप और उनके लिए कारतूस व बारूद तो विदेश से आते थे। अतः विद्रोहियों को पुरानी बंदूकों और तीर, भालो व तलवारो से लड़ना पड़ा। ऐसे हथियार आधुनिक बदूंको के सामने आखिर कितनी देर टिक पाते?

फिर भी अंग्रेज़ इस विद्रोह की तीव्रता से बहुत डर गए। जब भी उन्हें विजय हासिल हुई - उन्होने बड़ा ही निर्ममतापूर्ण व्यवहार किया। वे विद्रोहियो को अमानवीय तरीको से मारकर गांव-गांव में पेड़ो पर लटका देते ताकि गांव वाले विद्रोह का अंजाम समझ सकें। कई विद्रोहियो को तोप के मुंह पर बांध कर बारूद्ध से चिथड़े-चिथड़े उड़ा दिया गया। अनेको विद्रोही सालो तक अंग्रेज़ो से छुपते फिरते रहे। कई तो नेपाल आदि जगहो पर छुपने चले गए।

अंग्रेज़ो ने मुग़ल बादशाह बहादुरशाह ज़फर को भारत से निकाल कर रंगून भेज दिया और रंगून मे ही इस अंतिम मुग़ल बादशाह की मृत्यु हुई।

1857 का यह विद्रोह अंग्रेज़ो की ताकत को चुनौती देने वाला सबसे बड़ा विद्रोह था। इसे दबाने के बाद भारत पर उनकी पकड़ मज़बूत हो गई और वे अगले 90 सालो तक भारत पर शासन करते रहे।

1. सही विकल्प चुनो -
क. 1857 के विद्रोही मुग़ल काल की पुरानी व्यवस्था - हटाना/लौटाना चाहते थे।
ख. अंग्रेज़ी फौज की कमज़ोरी थी कि अधिकतर सैनिक - यूरोपीय/भारतीय थें।
2. विद्रोही फौजो की क्या कमज़ोरियां थीं?

कई लोग विद्रोह से दूर रहे

हमें यह नही सोचना चाहिए कि हर भारतीय अंग्रेज़ो के खिलाफ लड़ रहा था। पंजाब, बंगाल, दक्षिण भारत में विद्रोह नही के बराबर हुआ। कई ऐसे राजा थे जिनका राज्य तब तक सुरक्षित था। उन्होने विद्रोह न करके अंग्रेज़ो का साथ दिया। ऐसे राजा थे ग्वालियर के सिंधिया, इंदौर के होलकर, हैदराबाद के निज़ाम, राजस्थान के राजपूत राजा, भोपाल के नवाब आदि।

कई ज़मीदार व साहूकार थे जिन्होने अंग्रेज़ी कानून

विद्रोहियों को फांसी पर चढ़ाया जा रहा है

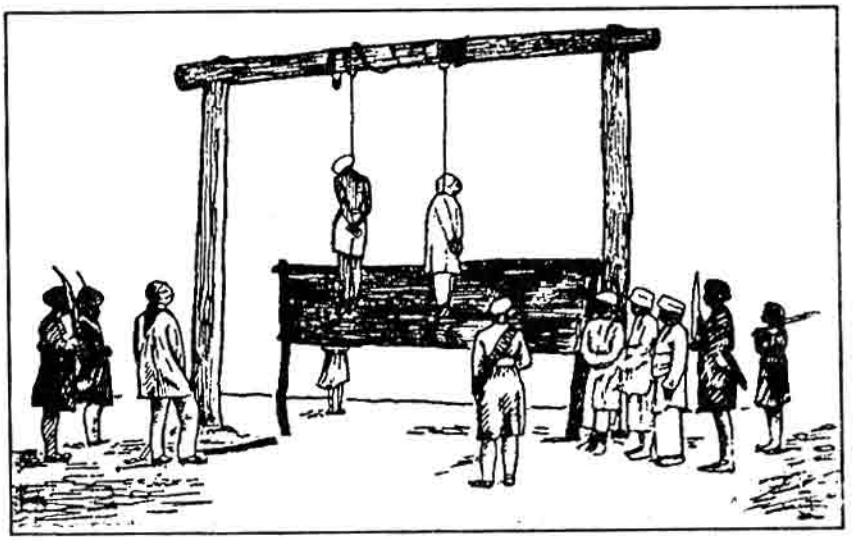

की सहायता से अपनी संपत्ति बढ़ा ली थी। वे भी अंग्रेज़ों से नही लड़े। कई ऐसे गांव थे जहां से अंग्रेज़ो द्वारा बनवाई गई नहरें निकली थी। जिन गांव वालों ने इसका फायदा उठाया था - उन पर लगान का बोझ कम ही था। ऐसे गांव के लोगों ने भी अंग्रेज़ो का साथ दिया।

बंगाल और महाराष्ट्र में कई समाज सुधारक विद्धान हुए जो सोचते थे कि अंग्रेज़ों का विज्ञान, शिक्षा, कायदे-कानून अच्छे हैं और इनको अपनाकर भारतीयों को अपने पिछड़े समाज को सुधारना है - इसमें ही भारतीयों की भलाई है। वे साचते थे कि अंग्रेज़ों का विरोध न करके, उनसे सीखने का प्रयास करना चाहिए। उन्हें लगता था कि अगर मुग़ल बादशाह और नवाब व राजाओं का राज्य फिर से स्थापित हुआ तो भारत पिछड़ जाएगा। ऐसे विद्वानों ने भी अंग्रेज़ों का विरोध नही किया।

विद्रोह के बाद

सन् 1857 का विद्रोह दबाने में अंग्रेज़ों को एक साल से भी ज़्यादा लगा। इसी दौरान उन्होंने अपनी कई नीतियों को बदला और नई नीतियों को अपनाया।

सन् 1858 में ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया ने महत्वपूर्ण घोषणा की। घोषणा में उसने कहा कि भारत के राजा अपने-अपने राज्य में निश्चिंत होकर राज्य करें। अंग्रेज़ अब उन्हें हटाने की कोशिश नही करेंगे। इस प्रकार उन्होंने राज-परिवारों को अपने साथ कर लिया। इसी तरह ज़मींदारों को कई रियायतें दी गयी और उनसे वादा किया गया कि उनकी संपत्ति की रक्षा की जाएगी। पंडितों और मौलवियों से वादा किया गया कि भारतीय धर्मों के मामले में अंग्रेज़ी सरकार दखल नहीं देगी और पुरानी परम्पराओं को चलने देगी। यह भी वादा था कि भारतीयों को शासन में सहयोग के लिए शामिल किया जायेगा।

सच में अंग्रेज़ों को सन् 1857 में अपना राज्य हाथ से जाता दिखा था। अब उनकी पूरी कोशिश यही रही कि भारत के महत्वपूर्ण लोगों को हर प्रकार की रियायत देकर, उनसे समझौता कर लें ताकि उनका समर्थन अंग्रेज़ों को मिलता रहे।

o o o o

अभ्यास के प्रश्न

1. यूरोपीय व्यापारी कंपनियों ने भारत में सेना क्यों रखी थी? कंपनी के काम में तुम्हें सेना का क्या महत्व नज़र आता है?
2. भारत के राज्यों में दखल करके कंपनियां कौन-कौन से फायदे हासिल कर पाती थी - चार उदाहरण बताओ।
3. 1857 तक भारत के कौन लोग अंग्रेज़ों के शासन के खिलाफ हुए और कौन लोग खिलाफ नही हुए - समझा कर लिखो।
4. क. लोगों ने सन् 1857 में किन तरीकों से अंग्रेज़ों का विरोध किया?
   ख. वे विरोध करके क्या पाना चाहते थे?
5. 1858 में इंग्लैंड की महारानी विक्टोरिया ने अपनी घोषणा में विद्रोहियों की कौन-कौन सी शिकायतें दूर की?